## अथ बिल्वः ( बेल )। तन्नामानि तद्बालफलनामगुणाँश्चाह

बिल्वः शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि। बालं बिल्वफलं बिल्वकर्कटी बिल्वपेशिका ॥
ग्राहिणी कफवातामशूलघ्नी बिल्वपेषिका ॥ ५६ ॥

बेल के संस्कृत नाम–बिल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर तथा श्रीफल ये सब हैं। बेल के कच्चे फल के संस्कृत नाम–बालबिल्वफल, बिल्वकर्कटी तथा बिल्वपेशिका ये सब हैं।

बेल के कच्चे फल–ग्राही एवम् कफ, वात, आम तथा शूल को नष्ट करने वाले होते हैं ॥५६॥

### अन्यच्च

बालं बिल्वफलं ग्राहि दीपनं पाचनं कटु। कषायोष्णं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥

ग्रन्थान्तर में कहे हुये कच्चे बेल के फल के गुण–यह ग्राही, अग्निदीपक, पाचक, कटु–तिक्त तथा कषाय रसयुक्त, उष्ण, लघु, स्निग्ध एवम् वात तथा कफ को दूर करने वाले होते हैं ॥ ५७ ॥

## अथ पक्वतत्फलगुणानाह

पक्वं गुरु त्रिदोषं स्याद् दुर्जरं पूतिमारुतम्। विदाहि विष्टम्भकरं मधुरं वह्निमान्द्यकृत् ॥५८॥

बेल का पका फल–मधुर रसयुक्त, गुरु, त्रिदोषजनक, देर में हजम होने वाला, दुर्गन्धयुक्त अधोवायु को करने वाला, विदाही, विष्टम्भ तथा अग्निमन्दता को उत्पन्न करने वाला होता है ॥ ५८ ॥

## अथ पक्वापेक्षया बालस्य बिल्वफलस्य गुणाधिक्यमाह

फलेषु परिपक्वं यद् गुणवत्तदुदाहृतम् ॥ ५९ ॥
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणाधिकम्। द्राक्षाबिल्वशिवाऽऽदीनां फलं शुष्कं गुणाधिकम् ॥

पके फल की अपेक्षा बेल के कच्चे फल के गुणाधिक्य का वर्णन—सामान्यरूप से फलों में पका फल ही अधिक गुणकारी कहा गया है किन्तु यह नियम बेल के फल के लिये नहीं है ऐसा समझना चाहिये, क्योंकि बेल का कच्चा फल ही विशेष गुणकारी होता है।

एवम्—द्राक्षा ( दाख ), बेल तथा हरड़ आदि के फल यदि सूखे हों तो अधिक गुणकारी होते हैं ॥ ५९–६० ॥

### १५ बेल का फल

नोट—बेल के सम्बन्ध में अन्य वर्णन गुडूच्यादिवर्ग में पृ० २७४–२७६) किया जा चुका है।

## अथ कपित्थः ( कैथ )। तन्नामानि तत्पक्वापक्वफलगुणाँश्चाह

कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः। कपिप्रियो दधिफलस्तथा दन्तशठोऽपि च ॥
कपित्थमामं संग्राहि कषायं लघु लेखनम्। पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ॥
स्यादम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥ ६२ ॥

कैथ के संस्कृत नाम –कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल तथा दन्तशठ ये सब हैं। कैथ का कच्चा फल—कषाय रसयुक्त, संग्राही, लघु तथा लेखन होता है। पका फल—अम्ल तथा कषाय रसयुक्त, गुरु, कण्ठ को साफ करने वाला, ग्राही, देर में हजम होने वाला एवम्–प्यास तथा हिक्का को शमन करने वाला और वात तथा पित्त को दूर करने वाला होता है ॥

# १८६. विल्व

## परिचय

**गण**—शोथहर, अर्शोघ्न, आस्थापनोपग, अनुवासनोपग (च०); बृहत् पंचमूल, वरुणादि, अम्वष्ठादि ( सु० )।

**कुल**—जम्बीर-कुल ( रुटेसी-Rutaceae )।

**नाम**—लै०-ईग्ल मार्मेलस ( Aegle marmelos Corr. ); सं०-बिल्व ( रोगान् बिलति भिनत्ति-जो रोगों को नष्ट करे ); शाण्डिल्य ( पीड़ा को दूर करने वाला ); शैलूष ( सुन्दर फल या पहाड़ों पर होने वाला ), श्रीफल ( सुन्दर फल ); मालूर ( शरीर की शोभा बढ़ाने वाला ); गन्धगर्भ ( गन्धयुक्त ); कण्टकी ( कंटकयुक्त ); सदाफल ( सदा फल लगे होने के कारण ); महाकपित्थ ( बड़े कपित्थ के समान ); ग्रन्थिल ( शाखायें गाँठदार होने से ); हि०-बेल; म०-बेल; गु०-बीली; पं०-बिल; बं०-बेल; मल०-विल्वम्; क०-विलपत्रे; ते०-मोरेडु; सि०-कठोरी; अ०-सफरजले हिन्दी; फा०-बेह हिंदी शुल्ल; अं०-बेल ( Bael ); इसकी मज्जा को बिल्वपेशिका, बिल्वकर्कटी कहते हैं। सूखे हुये गूदे को 'बेलसोंठ' या 'बेलगिरी' कहते हैं।

**स्वरूप**—इसका २५-३० फुट ऊँचा, ३-४ फीट मोटा, वर्षायुपत्रक, सीधे, तीक्ष्ण, अक्षीय, १ इंच लंबे कण्टकों से युक्त वृक्ष होता है। **पत्र**-संयुक्त, त्रिपत्रक और गंधयुक्त होते हैं। पत्रक-अण्डाकार या लट्वाकार-भालाकार, २-४ इञ्च लम्बे होते हैं जिनमें पार्श्विक पत्रक अवृन्त और अन्तिम दीर्घवृन्त होता हैं। पत्रवृन्त-१-२½ इञ्च लम्बा तथा मध्यदंड ½-१ इञ्च लम्बा होता है। **पुष्प**-हरिताभ श्वेत सुगन्धि १½-३ इञ्च लम्बी, अनेकसंख्य पार्श्विक या शीर्षस्थप्राय मंजरियों में नये पल्लवों के उद्गम के साथ आते हैं। **फल**-२-४ इञ्च व्यास का, गोलाकार या अंडाकार, धूसर पीताभ होता है जिसके भीतरी भाग में ८-१५ खण्ड होते हैं। फलत्वक् कठिन चिकनी और सुगन्धित होती है। फलमज्जा-पीतवर्ण, मधुर और सुगन्धित होती है जिसमें पिच्छिल द्रव्य से आवृत **बीज**-छोटे, कड़े, अनेक होते हैं। गर्मियों में पत्ते झड़ जाते हैं। पुष्प मई-जून मास में तथा फल दूसरे वर्ष मई-जून मास में पकते हैं।

**जाति**—यह वन्य और ग्राम्य दो प्रकार का होता है। जंगली बेल में फल छोटा और कांटे अधिक तथा ग्राम्य में फल बड़ा और कांटे कम होते हैं।

**उत्पत्तिस्थान**—यह समस्त भारत में, विशेषतः सूखे पहाड़ी क्षेत्रों में तथा हिमालय में ४ हजार फीट की ऊँचाई तक पाया जाता है।

**रासायनिक संघटन**—फलमज्जा में म्युसिलेज, पेक्टिन, शर्करा ( ४·६% ), टैनिन (६%), उड़नशील तैल, तिक्त सत्त्व, निर्यास तथा भस्म २ प्रतिशत होते

हैं। इसमें 'मार्मेलोसिन' ( Marmelosin ) नामक एक कार्यकारी द्रव्य होता है। ताजे पत्र से एक विशिष्ट गन्धयुक्त हरा-पीला तैल (०·६%) प्राप्त होता है। पत्र में ईगेलिन ( Aegelin ), ईगेलिनिन ( Aegelinin ) आदि अनेक क्षाराभ और कुमारिन पाये गये हैं। बीजों से भी एक हलके पीले रंग का तिक्त तैल ( ११·६% ) निकलता है जिसमें रेचक गुण होता है। मूल एवं काण्ड की छाल में अम्बेलिफेरोन एवं अन्य कुमारिन तथा एक क्षाराभ ०·३% होता है। काण्डत्वक् से मार्मिन ( Marmin ) नामक एक कुमारिन पाया गया है। काण्ड की भस्म में सोडियम और पोटाशियम के लवण, कैल्शियम और लौह के फास्फेट, कैल्शियम कार्बोनेट, मैगनीशियम कार्बोनेट, सिलिका आदि होते हैं।

## गुण

**गुण**—लघु, रूक्ष
**रस**—कषाय, तिक्त
**विपाक**—कटु
**वीर्य**—उष्ण

## कर्म

**दोषकर्म**—यह रूक्ष, लघु, कषाय और तिक्त होने से कफ का तथा उष्ण होने से वात का शामक है। इस प्रकार यह कफ-वात को शान्त करता है।

**संस्थानिक कर्म-बाह्य**—इसका पत्र शोथहर एवं वेदनास्थापन है।

**आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान**—इसका मूल नाडीतन्तुओं का शामक है।

**पाचनसंस्थान**—कच्चा फल दीपन, पाचन, ग्राही एवं कृमिघ्न है। पका फल कषाय, मधुर और मृदुरेचन है। अधिक लेने से यह विष्टम्भ उत्पन्न करता है। पत्रस्वरस यकृदुत्तेजक और पित्तसारक है।

**रक्तवहसंस्थान**—यह हृद्य और रक्तस्तम्भन है। शोथ को भी दूर करता है।

**श्वसनसंस्थान**—यह कफघ्न है।

**मूत्रवहसंस्थान**—यह मूत्र को कम करता है तथा तद्गत शर्करा भी इससे कम होती है।

**प्रजननसंस्थान**—यह गर्भाशय-शोथ को दूर करता है।

**तापक्रम**—इसका मूल एवं पत्र ज्वरघ्न है।

**सात्मीकरण**—पका फल मधुर होने से बल को बढ़ाता है।

## प्रयोग

**दोषप्रयोग-बाह्य**—नेत्राभिष्यन्द में पत्र का स्वरस नेत्र में डालते हैं तथा पत्तियों का लेप पलक पर लगाते हैं। पार्श्वशूल, शोथ आदि में पत्तियों से स्वेदन करते हैं।

**आभ्यन्तर-नाडीसंस्थान**—इसका मूल वातव्याधि, आक्षेपक, उन्माद, अनिद्रा आदि में प्रयुक्त होता है।

**पाचनसंस्थान**—मूलत्वक् एवं कच्चे फल का प्रयोग अग्निमान्द्य, अतिसार, प्रवाहिका और ग्रहणी में होता है। उदरशूल में भी लाभकर है। कच्चे फल का गूदा आग मे पका कर पुराने गुड़ या मधु के साथ मिला कर देने से रक्तातीसार, रक्तप्रवाहिका, रक्तार्श आदि में लाभ करता है। पका फल भी इन रोगों में देते हैं। विष्टम्भी होने के कारण पके फल का अधिक मात्रा में तथा अर्श आदि रोगों में अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए। विबंध में पका फल देते हैं इससे मल साफ होता है। पत्रस्वरस काली मिर्च के साथ विबन्ध तथा कामला में देते हैं। विसूचिका के प्रतिषेध के लिए इसका फल नित्य खिलाते हैं।

**रक्तवहसंस्थान**—इसका मूल हृद्दौर्बल्य तथा हृत्कम्प आदि में देते हैं। फल कषाय होने से रक्तस्तम्भन है। मूलत्वक् एवं पत्रस्वरस का शोथरोग में प्रयोग करते हैं।

**श्वसनसंस्थान**—पत्र का स्वरस प्रतिश्याय, कास, श्वास में लाभकर है।

**मूत्रवहसंस्थान**—पत्रस्वरस का प्रयोग इक्षुमेह में करते हैं। ताजे फल का गूदा कबाबचीनी का चूर्ण मिला कर दूध के साथ पूयमेह में देते हैं। इससे शोथ और वेदना कम होती है। छाल का स्वरस जीरा का चूर्ण और दूध के साथ शुक्रमेह में देते हैं।

**प्रजननसंस्थान**—यह गर्भाशय-शोथ, श्वेतप्रदर तथा सूतिकारोग को दूर करता है।

**तापक्रम**—इसकी मूलत्वक् विषमज्वर में देते हैं। पत्रस्वरस भी ज्वरनाशक है।

**सात्मीकरण**—बलवृद्धि के लिए पके फल का प्रयोग करते हैं।

**प्रयोज्य अंग**—मूल, त्वक्, पत्र, फल। चूर्ण आदि के लिए कच्चा फल, मुरब्बे के लिए अधपका फल और पानक ( शर्बत ) के लिए पका फल लेना चाहिए। दशमूल आदि कषायों में मूल की त्वचा ली जाती है।

**मात्रा**—चूर्ण–३–६ ग्रा०; स्वरस–१०–२० मि.लि.; पानक–२०–४० मि.लि.

**विशिष्ट योग**—बिल्वपंचक क्वाथ, बिल्वादि चूर्ण, बिल्वादि घृत, बिल्वतैल, बिल्वमूलादि गुडिका।

× × ×

**'बिल्वः शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि। गन्धगर्भः शलाटुश्च कण्टकी च सदाफलः॥**
**श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत्। वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः॥'**

( भा. प्र. )

**'कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहि दीपनम्। कटुतिक्तकषायोष्णं बालं बिल्वमुदाहृतम्॥**
**विद्यात्तदेव संपक्वं मधुरानुरसं गुरु। विदाहि विष्टम्भकरं दोषकृत् पूतिमारुतम्॥**

( सु. सू. ४६ )

**विविध भाषाओं में नाम-**

सं.- बिल्वः शाण्डिल्यः, शैलूषः श्रीफलः, शलाटुः कण्टकी। हि.- बेल, बिल्व, श्रीफल। बं.-म.-प.- बेल। गु.- बिलि, बिलु, बिलो। क.- बेल्लवन बेललु, बिल्वपत्री। ते.- मारेडु पण्डु बिल्व। ता.- बिल्व। म.- बेल फीले। द्रा.- बिल्व। अं.- दी बंगाल क्विन्स। ले.- एगल मार्मेलस।

**परिचयज्ञापिका सं.-** महाफलः, सदाफलः, हृद्यगन्धः, त्रिपत्रः, गन्धपत्रः कण्टकाढ्यः।

**गुण एवं दोष-**

**धन्वन्तरीय निघण्टु के अनुसार-** बेल का मूल, त्रिदोष नाशक तथा वमन शामक है तथा मधुर रस एवं लघु है। बेल का फल अम्ल रस, स्निग्ध, संग्राही तथा जठराग्नि दीपक है। यह कटु रस, तिक्त रस, कषाय रस, उष्ण तथा तीक्ष्ण है और वात-कफ नाशक है। वही पक्व बेल फल मधुरानुरस तथा गुरु कहा जाता है। वह विदाही है, विष्टम्भकारक है, दोषों को दूर करनेवाला तथा उससे दुर्गन्धित गन्ध निकलता है।

**राजनिघण्टु के अनुसार-** बेल मधुर, हृदय को बल देनेवाला तथा कषाय रस है और पित्त नाशक है, गुरु है तथा कफ ज्वर एवं अतिसार नाशक तथा रुचिकारक एवं उत्तम जठराग्नि दीपक है। बेल का मूल त्रिदोष नाशक, मधुर, लघु तथा वातशामक है। कच्चा बेल का फल कोमल, स्निग्ध, गुरु, ग्राही तथा जठराग्नि दीपक है। वही पका बेल फल मधुर, सरस तथा गुरु है। यह कटु रस, तिक्त रस, कषाय रस, उष्ण, ग्राही तथा त्रिदोष नाशक है।

**भावप्रकाश के अनुसार-** श्रीफल (बेल) कषाय रस, तिक्त रस, ग्राही तथा रूक्ष है और अग्नि तथा पित्त विकार को जीत लेता है। यह वात-कफ को दूर करनेवाला है, बलकारक है, लघु है, उष्ण है तथा पाचक है।

**राजवल्लभ के अनुसार-** बाल बिल्व कषाय रस, उष्ण तथा पाचन है और अग्नि दीपक है, संग्राही है, तिक्त रस, कटु रस तथा तीक्ष्ण है और वात-कफनाशक है। पका हुआ बेल फल सुगन्धित, मधुर, दुर्जर, ग्राही तथा अग्नि दीपक है यह कफ विकार, वात विकार, आम विकार तथा शूल का नाश करता है और बेल की पेशी (छाल) ग्राही है। बेल का मूल वात विकार, कफ-विकार तथा वमन का नाश करनेवाला है और रक्त पित्त को दूर करता है। पके हुए फल में जो गुण कहे गये हैं वे बेल को छोड़कर अन्य फलों में होते हैं। बेल का कच्चा फल ही अधिक गुणवाला होता है।

**बृहन्निघण्टु रत्नाकर के अनुसार-** बेल का पत्ता कफ विकार, वात विकार तथा शूल का नाश करता है, ग्राही है तथा रोचक है। बेल का पुष्प अतिसार, प्यास तथा वमन का नाश करता है। बेल मज्जा से सिद्ध तैल उष्ण है तथा उत्तम वात नाशक है। काञ्जी में रक्खा हुआ बेल उत्तम अग्नि दीपक है। यह हृदय को बल देनेवाला रुचिकारक तथा आमवात नाशक कहा गया है। मुनक्का बेल तथा हरे का सूखा फल अधिक गुणवाले हैं।

**वैद्यक शास्त्र में बेल का प्रयोग-**

(१) **ज्वर में बिल्व शलाटु का प्रयोग-** ज्वर में बेल शलाटु का चूर्ण प्रयोग करे। (च.चि.अ.३)। (२) **अर्श रोग में बिल्व छाल का प्रयोग-** थोड़ा गरम बेल मूल छाल का क्वाथ में शूल से पीड़ित अर्श के रोगी को बैठाये। (च.चि.अ.९)। (३) **प्रवाहिका में बिल्व शलाटु का प्रयोग-** बाल बिल्व का कल्क तथा तिल का कल्क दोनों समभाग लेकर दही के पतला अम्ल रस में स्नेह मिलाकर खड़ तैयार करे। यह सेवन करने से प्रवाहिका को नष्ट करता है। (च.चि.अ.१०)।

(१) **स्कन्द ग्रह प्रतिषेध के लिए बेलकण्टक का प्रयोग**- स्कन्द ग्रह से गृहीत बालक को बेल के काटों का माला पहनावे। (सु.उ.अ.२८)। (२) **पित्त रक्तोत्थित अतिसार में विल्व शलाटु का प्रयोग**- बिल्व शलाटु (बेल फल का मध्य भाग) का चूर्ण तथा मुलेठी का चूर्ण शक्कर तथा मधुर मिलाकर चावल के धोअन के साथ पान कराये। यह पित्त-रक्त जन्य अतिसार को शान्त करता है। (सु.चि.अ.४०)।

(१) **गात्र दुर्गन्ध में बेल पत्र का प्रयोग**- बेल पत्र के रस के शरीर में लगाने से गात्र की दुर्गन्धता का नाश करता है। (चक्र.स्थौल्य-चि.)। (२) **ग्रहणी में बिल्व शलाटु का प्रयोग**- बिल्व फल शलाटु (मध्य भाग) का कल्क सोंठ चूर्ण मिलाकर गुड़ के साथ सेवन करने से मट्ठा पान करनेवाला रोगी का भयंकर ग्रहणी रोग शान्त होता है। (चक्र.ग्रहणी चि.)। (३) **वमन में बेल मूल का प्रयोग**- बेल के मूल का क्वाथ मधु मिलाकर तथा शीतल कर तीनों प्रकार के वमन में पान कराये। (चक्र.छर्दिचि.) (४) **रक्तार्श में विल्व शलाटु का प्रयोग**- रक्तार्श में विल्व शलाटु का क्वाथ प्रयोग करे। (चक्र.अर्शचि.)। (५) **शोथ में बिल्व पत्र का प्रयोग**- बेल पत्र का छना हुआ रस मरिच का चूर्ण मिलाकर तीनों प्रकार के शोथ में विडसंग (विबन्ध) में, अर्श रोग में तथा कामला रोग में भी प्रयोग करे। (चक्र.शोथ चि.)। (६) **बाधिर्य में विल्व शलाटु का प्रयोग**- बेल शलाटु (बेल फल के मध्य भाग) गोमूत्र के साथ तथा बकरी के दूध में पीसकर तथा बकरी का दूध मिलाकर विधिवत तैलपाक करे। वह तैल कान में डालने से कर्ण-बाधिर्य का नाश करता है। (चक्र.कर्ण चि.)।

**आमशूल में बाल विल्व का प्रयोग**- बाल विल्व के कल्क को (या चूर्ण को) गुड़ के साथ खाय। यह रक्तातिसार का नाश करता है। यह आमशूल तथा विबन्ध का नाश करता है और उदर रोग को अच्छी तरह दूर करता है। (भावप्र.म.१)।

**बच्चों के वमन तथा अतिसार में विल्व मूल का प्रयोग**- बेलमूल के क्वाथ के साथ लाई का चूर्ण शक्कर मिलाकर तथा क्वाथ में घोल कर बालक को पान कराये। यह बालकों के वमन तथा अतिसार का नाश करता है। (वंगसेन)।